

2023



## Employment oriented training of Scheduled Tribes

A three-day training program for Scheduled Tribes sponsored by Agriculture Department Lakhimpur Kheri under the Agricultural Technology Management Agency (ATMA) scheme was concluded at Krishi Vigyan Kendra-2, Katia, Sitapur.



Krishi Vigyan Kendra-II  
Sitapur, Uttar Pradesh



# Employment oriented training given to Scheduled Tribes

---

A three-day training program for Scheduled Tribes sponsored by Agriculture Department Lakhimpur Kheri under the Agricultural Technology Management Agency (ATMA) scheme was concluded at Krishi Vigyan Kendra-2, Katia, Sitapur.

Presiding over the program, Dr. Daya Shankar Srivastava, Senior Scientist and Head of Krishi Vigyan Kendra, said that in the coming times, new innovations will have to be given a faster place in traditional farming and diversification of agriculture will have to be adopted as an alternative, which will have a direct impact on nutrition, social and economic development. He also talked about the protection of plant varieties under the Protection of Plant Varieties and Farmers' Rights Act (PPV&FRA), effective arrangement of the farmer's rights and its protection recognition of the plant breeders to encourage the development of new varieties of plants.

Program Coordinator and Scientist Agri-Extension Shailendra Singh, talking on agriculture-based entrepreneurship for "Tharu community", he said that today agriculture entrepreneurship is being seen as a major catalyst and conductor of rural economy, he has given mushroom training for landless and less landholding farmers. He also talked on the bee-keeping practices and market values of its by-products, formation of farmer producer organization (FPOs), medicinal and aromatic plant production cultivation etc. He said that the Tharu tribe, who have been living in the forests of Dudhwa from hundreds of years, are also the center of attraction for the tourists. It is necessary that the people living here form their own group or organization and do such wonderful work that it becomes a major center for tourists to visit.

Dr. Anand Singh, Animal Husbandry Scientist, while talking on income generation and nutritional security through livestock based integrated farming system informed the participants about low cost activities like artificial insemination in cattle, backyard poultry farming, animal chocolate, breed improvement.

Presenting the depleting fertility of cultivable land and the pleasant results of natural farming, soil scientist Sachin Pratap Tomar said that natural farming is necessary for healthy India, self-reliant India and best India. He told that we are continuously testing this method on the farm area of the center.

Answering the questions of the farmers related to the cultivation of sugarcane, paddy, banana, Dr. Shishir Kant Singh, agricultural scientist of the center, talked about the newly release varieties of the crops, as well as talking in detail on the usefulness of drone technology in agriculture.

Dr. Reema, Home Scientist discussing in detail about the importance of International Millet Year 2023 and employment opportunities in it, said that this is not new to our agricultural system, earlier we used to do the same and now once again seeing the demand of time you can adopt it very successfully. There is a huge employment opportunity in their seed production.

The participants were motivated for employment by taking them on tour to various units of Krishi Vigyan Kendra.

# Activities overview







# Program in print media

हिन्दी दैनिक विश्व विचार लखीमपुर

## अनुसूचित जनजातियों को दिया गया रोजगार परक प्रशिक्षण

❖ कृषि वैज्ञानिकों ने उपस्थित प्रतिभागियों को खेती किसानों के बताए गुर।

विश्व विचार संवाददाता

मानपुर/सीतापुर। कृषि विज्ञान केंद्र द्वितीय कटिया में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) योजनान्तर्गत कृषि विभाग लखीमपुर खीरी द्वारा प्रायोजित अनुसूचित जनजातियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डा. दया शंकर श्रीवास्तव ने कहा कि आने वाले समय में परम्परागत खेती में नवीन नवाचारों को तेजी से स्थान देना होगा। कृषि की विविधताओं को विकल्प के तौर पे अपनाया जाएगा। जिसका सीधा असर पोषण सामाजिक और आर्थिक विकास पर पड़ता है। कार्यक्रम समन्वयक व प्रसार वैज्ञानिक शैलेन्द्र



सिंह ने थारू समुदाय के लिए कृषि आधारित उद्यमिता पर वार्ता करते हुए बताया कि आज कृषि उद्यमिता को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रमुख उत्प्रेरक एवं संवाहक के रूप में देखा जा रहा है। उन्होंने भूमिहीन व कम जोत के किसानों के लिए मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, किसान उत्पादक संगठन, औषधीय व संगंध पौध उत्पादन आदि पर विस्तार से वार्ता की। पशुधन आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली के माध्यम से आय सृजन और पोषण सुरक्षा पर वार्ता

करते हुए पशुपालन वैज्ञानिक डा. आनंद सिंह ने पशुओं में कृतिम गर्भाधान, घर के पिछवाड़े मुर्गी पालन, पशु चॉकलेट, नस्ल सुधार जैसे कम लागत वाले कार्यों के साथ जुड़कर प्रतिभागियों को आय सृजन के विभिन्न रास्ते दिखाए। खेती योग्य जमीन की क्षीण होती उर्वरा शक्ति व प्राकृतिक खेती के सुखद परिणाम की प्रस्तुति करते हुए मृदा वैज्ञानिक सचिन प्रताप तोमर ने स्वस्थ भारत, आत्मनिर्भर भारत और श्रेष्ठ भारत के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी

बताया। उन्होंने बताया कि हम अनवरत केंद्र के फार्म प्रक्षेत्र पर इस विधा का परीक्षण कर रहे हैं। गन्ना, धान, केला की खेती से जुड़े कृषकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए केंद्र के सस्य वैज्ञानिक डा. शिशिर कांत सिंह ने इस क्षेत्र के उन्नत प्रजातियों पर वार्ता की। साथ ही कृषि में किसान ड्रोन प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया। अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 के महत्त्व व इसमें रोजगार के अवसर पर डा. रीमा गुह वैज्ञानिक ने विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि यह हमारी कृषि पद्धति के लिए नया नहीं है। पहले हम यही करते थे और अब एक बार पुनः समय कि मांग को देखते हुए इसे बहुत ही सफलता पूर्वक अपना सकते हैं। इनके बीज उत्पादन में रोजगार का बड़ा अवसर है। उपस्थित प्रतिभागियों को कृषि विज्ञान केंद्र की विभिन्न इकाइयों के भ्रमण कराते हुए रोजगार हेतु प्रेरित किया गया।



## अनुसूचित जनजातियों को दिया गया रोजगार परक प्रशिक्षण

❖ कृषि वैज्ञानिकों ने उपस्थित प्रतिभागियों को खेती किसानों के बताए गुर

मानपुर/सीतापुर। कृषि विज्ञान केंद्र द्वितीय कटिया में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) योजनान्तर्गत कृषि विभाग लखीमपुर खीरी द्वारा प्रायोजित अनुसूचित जनजातियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डा. दया शंकर श्रीवास्तव ने कहा कि आने वाले समय में परम्परागत खेती में नवीन नवाचारों को तेजी से स्थान देना होगा। कृषि की विविधताओं को विकल्प के तौर पे अपनाया जाएगा। जिसका सीधा असर पोषण सामाजिक और आर्थिक विकास पर पड़ता है। कार्यक्रम समन्वयक व प्रसार वैज्ञानिक शैलेन्द्र सिंह ने थारू समुदाय के लिए कृषि आधारित उद्यमिता पर वार्ता करते हुए बताया कि आज कृषि उद्यमिता को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रमुख उत्प्रेरक एवं संवाहक के रूप में देखा जा रहा है। उन्होंने भूमिहीन व कम जोत के किसानों के लिए मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, किसान उत्पादक



संगठन, औषधीय व संगंध पौध उत्पादन आदि पर विस्तार से वार्ता की। पशुधन आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली के माध्यम से आय सृजन और पोषण सुरक्षा पर वार्ता करते हुए पशुपालन वैज्ञानिक डा. आनंद सिंह ने पशुओं में कृतिम गर्भाधान, घर के पिछवाड़े मुर्गी पालन, पशु चॉकलेट, नस्ल सुधार जैसे कम लागत वाले कार्यों के साथ जुड़कर प्रतिभागियों को आय सृजन के विभिन्न रास्ते दिखाए। खेती योग्य जमीन की क्षीण होती उर्वरा शक्ति व प्राकृतिक खेती के सुखद परिणाम की प्रस्तुति करते हुए मृदा वैज्ञानिक सचिन प्रताप तोमर ने स्वस्थ भारत, आत्मनिर्भर भारत और श्रेष्ठ भारत के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी बताया। उन्होंने बताया कि हम अनवरत केंद्र के फार्म प्रक्षेत्र पर इस विधा

का परीक्षण कर रहे हैं। गन्ना, धान, केला की खेती से जुड़े कृषकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए केंद्र के सस्य वैज्ञानिक डा. शिशिर कांत सिंह ने इस क्षेत्र के उन्नत प्रजातियों पर वार्ता की। साथ ही कृषि में किसान ड्रोन प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया। अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 के महत्त्व व इसमें रोजगार के अवसर पर डा. रीमा गुह वैज्ञानिक ने विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि यह हमारी कृषि पद्धति के लिए नया नहीं है। पहले हम यही करते थे और अब एक बार पुनः समय कि मांग को देखते हुए इसे बहुत ही सफलता पूर्वक अपना सकते हैं। इनके बीज उत्पादन में रोजगार का बड़ा अवसर है। उपस्थित प्रतिभागियों को कृषि विज्ञान केंद्र की विभिन्न इकाइयों के भ्रमण कराते हुए रोजगार हेतु प्रेरित किया गया।

# अनुसूचित जनजातियों को दिया गया रोजगार परक प्रशिक्षण

**क्रांतिदूत संवाददाता  
सीतापुर/मानपुर**

कृषि विज्ञान केंद्र-२ कटिया सीतापुर में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) योजनान्तर्गत कृषि विभाग लखीमपुर खीरी द्वारा प्रायोजित अनुसूचित जनजातियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ दया शंकर श्रीवास्तव ने कहा कि आने वाले समय में परम्परागत खेती में नवीन नवाचारों को तेजी से स्थान देना होगा व कृषि की विविधताओं को विकल्प के तौर पे अपनाया होगा। जिसका सीधा असर पोषण, सामाजिक और आर्थिक विकास पर पड़ता है। कार्यक्रम समन्वयक व प्रसार वैज्ञानिक शैलेन्द्र सिंह ने थारू समुदाय के लिए कृषि आधारित



उद्यमिता पर वार्ता करते हुए बताया कि आज कृषि उद्यमिता को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रमुख उत्प्रेरक एवं संवाहक के रूप में देखा जा रहा है। उन्होंने भूमिहीन व कम जोत के किसानों के लिए मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, किसान उत्पादक संगठन, औषधीय व संगंध पौध उत्पादन आदि पर विस्तार से वार्ता की। पशुधन आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली के माध्यम से आय सृजन और पोषण सुरक्षा पर वार्ता करते

हुए पशुपालन वैज्ञानिक डॉ आनंद सिंह ने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान, घर के पिछवाड़े मुर्गी पालन, चाँकलोट, नस्ल सुधार जैसे कम लागत वाले कार्यों के साथ जुड़कर प्रतिभागियों को आय सृजन के विभिन्न रास्ते दिखाए। खेती योग्य जमीन की क्षीण होती उर्वरा शक्ति व प्राकृतिक खेती के सुखद परिणाम की प्रस्तुति करते हुए मृदा वैज्ञानिक सचिन प्रताप तोमर ने स्वस्थ भारत, आत्मनिर्भर भारत और श्रेष्ठ भारत के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी बताया। उन्होंने बताया कि हम अनवरत केंद्र के फार्म प्रक्षेत्र पर इस विधा का

परीक्षण कर रहे हैं। गन्ना, धान, केला कि खेती से जुड़े कृषकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए केंद्र के सस्य वैज्ञानिक डॉ शिशिर कांत सिंह ने इस क्षेत्र के उन्नत प्रजातियों पर वार्ता की साथ ही कृषि में किसान ड्रोन प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया। अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष २०२३ के महत्त्व व इसमें रोजगार के अवसर पर डॉ रीमा, गृह वैज्ञानिक ने विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि यह हमारी कृषि पद्धति के लिए नया नहीं है पहले हम यही करते थे। और अब एक बार पुनः समय कि मांग को देखते हुए इसे बहुत ही सफलता पूर्वक अपना सकते हैं। इनके बीज उत्पादन में रोजगार का बड़ा अवसर है। प्रतिभागियों को कृषि विज्ञान केंद्र की विभिन्न इकाइयों के भ्रमण कराते हुए रोजगार हेतु प्रेरित किया गया।

# अनुसूचित जनजातियों को दिया गया रोजगार परक प्रशिक्षण

मानपुर -राष्ट्रराज्य संवाददाता- कृषि विज्ञान केंद्र-२, कटिया, सीतापुर में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) योजनान्तर्गत कृषि विभाग लखीमपुर खीरी द्वारा प्रायोजित अनुसूचित जनजातियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ दया शंकर श्रीवास्तव ने कहा कि आने वाले समय में परम्परागत खेती में नवीन नवाचारों को तेजी से स्थान देना होगा व कृषि की विविधताओं को विकल्प के तौर पे अपनाया होगा। जिसका सीधा असर पोषण, सामाजिक और आर्थिक विकास पर पड़ता है। कार्यक्रम समन्वयक व प्रसार वैज्ञानिक शैलेन्द्र सिंह ने थारू समुदाय के लिए कृषि आधारित उद्यमिता पर वार्ता करते हुए बताया कि आज कृषि उद्यमिता को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रमुख उत्प्रेरक एवं संवाहक के रूप में देखा जा रहा है, उन्होंने भूमिहीन व कम जोत के किसानों के लिए मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, किसान उत्पादक संगठन, औषधीय व संगंध पौध

उत्पादन आदि पर विस्तार से वार्ता की। पशुधन आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली के माध्यम से आय सृजन

करते हुए मृदा वैज्ञानिक सचिन प्रताप तोमर ने स्वस्थ भारत, आत्मनिर्भर भारत और श्रेष्ठ भारत के लिए प्राकृ

अनाज वर्ष २०२३ के महत्त्व व इसमें रोजगार के अवसर पर डॉ रीमा, गृह वैज्ञानिक ने विस्तार से चर्चा करते



और पोषण सुरक्षा पर वार्ता करते हुए पशुपालन वैज्ञानिक डॉ आनंद सिंह ने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान, घर के पिछवाड़े मुर्गी पालन, पशु चाँकलोट, नस्ल सुधार जैसे कम लागत वाले कार्यों के साथ जुड़कर प्रतिभागियों को आय सृजन के विभिन्न रास्ते दिखाए। खेती योग्य जमीन की क्षीण होती उर्वरा शक्ति व प्राकृतिक खेती के सुखद परिणाम की प्रस्तुति

किए। उन्होंने बताया कि हम अनवरत केंद्र के फार्म प्रक्षेत्र पर इस विधा का परीक्षण कर रहे हैं। गन्ना, धान, केला कि खेती से जुड़े कृषकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए केंद्र के सस्य वैज्ञानिक डॉ शिशिर कांत सिंह ने इस क्षेत्र के उन्नत प्रजातियों पर वार्ता की साथ ही कृषि में किसान ड्रोन प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया। अंतरराष्ट्रीय मोटा

हुए कहा कि यह हमारी कृषि पद्धति के लिए नया नहीं है पहले हम यही करते थे और अब एक बार पुनः समय कि मांग को देखते हुए इसे बहुत ही सफलता पूर्वक अपना सकते हैं। इनके बीज उत्पादन में रोजगार का बड़ा अवसर है। प्रतिभागियों को कृषि विज्ञान केंद्र की विभिन्न इकाइयों के भ्रमण कराते हुए रोजगार हेतु प्रेरित किया गया।

# अनुसूचित जनजातियों को दिया गया रोजगार परक प्रशिक्षण

स्मार्ट हलवल

सीतापुर। कृषि विज्ञान केंद्र-2, कटिया, सीतापुर में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) योजनान्तर्गत कृषि विभाग लखीमपुर खीरी द्वारा प्रायोजित अनुसूचित जनजातियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्य संपन्न हुआ।

कार्य में की अध्यक्षता करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. दया शंकर श्रीवास्तव ने कहा कि आने वाले समय में परम्परागत खेती में नवीन नवाचारों को तेजी से स्थान देना होगा व कृषि की विविधताओं को विकल्प के तौर पे अपनाया होगा, जिसका सीधा असर पोषण, सामाजिक और आर्थिक विकास पर पड़ता है।

कार्य में समन्वयक व प्रसार वैज्ञानिक शैलेन्द्र सिंह ने थारू समुदाय के लिए कृषि आधारित उद्यमिता पर वार्ता करते हुए बताया कि आज कृषि उद्यमिता को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रमुख उत्प्रेरक एवं संवाहक के रूप में देखा जा रहा



है, उन्होंने भूमिहीन व कम जोत के किसानों के लिए मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, किसान उत्पादक संगठन, औषधीय व सगंध पौध उत्पादन आदि पर विस्तार से वार्ता की। पशुधन आधारित एककृत कृषि प्रणाली के माध्यम से अय सुजन और पोषण सुखा पर वार्ता करते हुए पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. आनंद सिंह ने पशुओं में कृतिम गर्भाधान, घर के पिछवाड़े मुर्गी पालन, पशु चॉकलेट, नस्ल सुधार जैसे कम लागत वाले कार्यों के साथ जुड़कर प्रतिभागियों को आय सुजन के विभिन्न रास्ते

दिखाए। खेती योग्य जमीन की क्षीण होती उर्वर शक्ति व प्राकृतिक खेती के सुखद परिणाम की वस्तुतः करते हुए मृदा वैज्ञानिक सचिन प्रताप तोमर ने स्वस्थ भारत, आत्मनिर्भर भारत और श्रेष्ठ भारत के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी बताया। उन्होंने बताया कि हम अनवरत केंद्र के फर्म प्रक्षेत्र पर इस विधा का परीक्षण कर रहे हैं। गन्ना, धान, केला कि खेती से जुड़े कृषकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए केंद्र के सस्य वैज्ञानिक डॉ. शिशिर कांत सिंह ने इस क्षेत्र के उन्नत प्रजातियों पर वार्ता की साथ ही कृषि

में किसान ड्रेन प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया। अंतरराष्ट्रीय मोटू अनज वर्प 2023 के महत्त्व व इसमें रोजगार के अवसर पर डॉ. रीम, गृह वैज्ञानिक ने विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि यह हमारी कृषि पद्धति के लिए नया नहीं है पहले हम यही करते थे और अब एक बार पुनः समय कि मांग को देखते हुए इसे बहुत ही सफलता पूर्वक अपना सकते हैं। इनके बीज उत्पादन में रोजगार का बड़ा अवसर है। प्रतिभागियों को कृषि विज्ञान केंद्र की विभिन्न इकाइयों के भ्रमण करते हुए रोजगार हेतु प्रेरित किया गया।

epaper  
हिन्दुस्तान



Share



Copy url



Save



Font Size



D'load Image



Image



Text



Listen

## परम्परागत खेती में नए अनुसंधान से मिलेगा लाभ

मानपुर। कृषि विज्ञान केंद्र कटिया में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) योजनान्तर्गत अनुसूचित जनजातियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम कृषि विभाग लखीमपुर खीरी द्वारा प्रायोजित किया गया था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. दया शंकर श्रीवास्तव ने कहा कि आने वाले समय में परम्परागत खेती में नवीन नवाचारों को तेजी से स्थान देना होगा। कार्यक्रम समन्वयक व प्रसार वैज्ञानिक शैलेन्द्र सिंह ने कहा कि कृषि उद्यमिता को ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रमुख उत्प्रेरक एवं संवाहक के रूप में देखा जा रहा

है, भूमिहीन व कम जोत के किसानों के लिए मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, किसान उत्पादक संगठन, औषधीय व सगंध पौध उत्पादन आदि पर विस्तार से वार्ता की। डॉ. रीमा ने कहा कि यह हमारी कृषि पद्धति के लिए नया नहीं है पहले हम यही करते थे और अब एक बार पुनः समय कि मांग को देखते हुए इसे बहुत ही सफलता पूर्वक अपना सकते हैं। पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. आनंद सिंह ने पशुओं में कृतिम गर्भाधान, मुर्गी पालन, पशु चॉकलेट, नस्ल सुधार जैसे कम लागत वाले कार्यों के साथ जुड़कर विभिन्न रास्ते दिखाए। मृदा वैज्ञानिक सचिन प्रताप तोमर, वैज्ञानिक डॉ. शिशिर कांत सिंह ने भी प्रशिक्षण दिया।